पाँचवा अध्याय

समापन

पाँचवा अध्याय

समापन

प्रस्तुत लघु प्रबन्ध के आधार पर मैंने कुछ निष्कर्ष प्रस्तुत किए हैं ---

१) स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी हिन्दी के एक सफल कवि एवं गजलकार हैं। वे एक सफल उपन्यासकार भी हैं। उपन्यास लेखन की सभी खुबियाँ उनमें पाई जाती हैं। निष्कर्षतया हम कहेंगे कि स्वर्गीय दुष्यन्तकुमार त्यागी आजादी के बाद के प्रमुख साहित्यकारों में से एक है।

२) दुष्यन्तकुमार ने काव्य के साथ-साथ उपन्यास, नाटक, एकांकी, संस्मरण, समीक्षा आदि सभी साहित्यिक विधाओं में लेखनी चलाई है। अत: इन कृतियों से स्पष्ट है कि उनका व्यक्तित्व बहुमुखी था और उनमें साहित्य निर्माण की विविध शैलियों की क्षमता थी।

३) दुष्यन्तकुमार ने हिन्दी गजल में मनुष्य की पीडा को व्यक्त करके हिन्दी गजल को एक नयी दिशा प्रदान की।

४) उनके उपन्यासों को पढनेपर ऐसा लगता है कि हम उपन्यास नहीं पढ रहे, बल्कि कविता पाठ कर रहे है। कवि होने से उनके उपन्यासों में काव्यमयी शैली के दर्शन होते है।

५) दुष्यन्तकुमार के उपन्यासों में तत्कालिन समस्याओं का चित्रण है । उनका ` छोटे छोटे सवाल ` उपन्यास शिक्षा-क्षेत्र में चलनेवाले भ्रष्टाचार का पर्दाफाश करता है । तो ` आंगन में एक वृक्ष ` उपन्यास जमींदारों की अय्यासी, क्रूरता, हेकडी , रितिरिवाजों की ओर संकेत करता हैं ।

६) आज यदि काव्य, गजल के क्षेत्र में दुष्यन्तजी ने पर्याप्त ख्याति प्राप्त कर ली है, तो एक हिन्दी उपन्यासकार के रूप में भी उनका योगदान असाधारण है ।

७) भाषाशैली के आधारपर दुष्यन्तकुमार के उपन्यास साहित्य को आंकनेपर भी उनका महत्व किसी दृष्टि से कम नहीं होता है । उन्होंने सरल, सरस बोलचाल की भाषा का प्रयोग किया हैं । प्रसंग और विषय के अनुकूल भाषा में परिवर्तन भी किया है । काव्यात्मकता उनकी भाषा का एक गुण है ।

८) उनके साहित्य में विविध शैलियों के दर्शन होते है ।

९) संवाद और वर्णन शैली का प्रयोग भी सफल हुआ है । उनके उपन्यासों में प्रयुक्त संवाद छोटे छोटे और विचार भाव, वातावरण को निर्माण करने में सफल हुये है । इस प्रकार शिल्प विधान की दृष्टि से उनके उपन्यास सफल बन पडे हैं ।

१०) समग्र रूप से दुष्यन्तकुमार के साहित्य का अवलोकन करने के पश्चात हिन्दी साहित्यकारों में उनका स्थान निश्चित करना कठिन नहीं रह जाता । इस प्रकार अन्तत: यही कहना चाहिए कि दुष्यन्तकुमार एक बहुमुखी प्रतिभा - सम्पन्न साहित्यकार थे ।